हरियाणवी राजनीति को ठिकाने लगाने की भाजपाई तैयारी

भाजपा अपने दो मोहरों की मदद से हरियाणा की परंपरागत राजनीति का मुंह मोड़ना चाहती है, ताज्जुब है कि कांग्रेस और इनेलो को यह समझ में नहीं आ रहा....

मजदूर मोर्चा की स्पेशल रिपोर्ट

फरीदाबाद: हरियाणा में आगामी लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव के मद्देनजर भाजपा ऐसी व्यूह रचना कर रही है कि अभी तक राज्य के मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस और चौटाला खानदान की इनैलो पार्टी को उसकी भनक तक नहीं है। ताज्जुब है कि दोनों ही विपक्षी दलों में धुरंधर नेताओं की कमी नहीं है इसके बावजूद वे भाजपा के तिकड़म को समझ नहीं सके।

भाजपा के साथ जाट कब थे

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि राज्य में जाट और पिछड़े कभी भाजपा के साथ नहीं रहे। ये लोग कभी कांग्रेस तो कभी बंसीलाल तो कभी देवीलाल और बाद में चौटाला के साथ रहे। जाट लीडरशिप इन्हीं दोनों पार्टियों के पास रही। कांग्रेस में जब भजनलाल की चलती थी तो उन्होंने किसी जाट नेता को उभरने नहीं दिया, उन हालात में भी जाट भाजपा की शरण में नहीं गए। भाजपा के साथ हमेशा से हरियाणा के शहरी पंजाबी वोटर रहे या फिर समीकरण के हिसाब से उसे विभिन्न सीटों पर लोग जिताते रहे लेकिन भाजपा एक भी प्रदेश स्तर का जाट नेता न पैदा कर पायी और न उभार पायी।

भाजपा के दो मोहरे मैदान में

भाजपा आलाकमान ने यह मान लिया कि अगर हरियाणा में शासन करना है तो जाटों और पिछड़ों को पूरी तरह अलग-थलग करना होगा। हरियाणा में सत्ता पाते ही उसने बहुत सोची समझी रणनीति के तहत अपने दो मोहरे मैदान में उतारे। पिछड़ों की राजनीति करने के लिए उसने अपने ही सांसद राजकुमार सैनी को आगे किया और जाटों को बांटने के लिए यूपी से यशपाल मलिक को इंपोर्ट किया।

राजकुमार सैनी

यशपाल मलिक

ये दोनों नेता भाजपा के साथ रहते हुए भी यह कहकर शहीद होने की कोशिश में जुट गए कि देखो हम भाजपा की आलोचना कर रहे हैं। देखो हम किस तरह खट्टर और बाकी जाट नेताओं को कोस रहे हैं।

सैनी को भाजपा क्यों झेल रही है

भाजपा सांसद राजकुमार सैनी ने शुक्रवार को एक कदम और चाल चलते हुए घोषणा कि उनकी लोकतंत्र सुरक्षा पार्टी (एलएसपी) हरियाणा की सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी। सैनी ने 2 सितंबर यानी रविवार को अपनी पार्टी की बाकी रूपरेखा बताने के लिए पानीपत में सम्मेलन बुलाया हुआ है। अब गौर कीजिए, जिस भाजपा में अनुशासन के नाम पर छोटे-छोटे कार्यकर्ता निकाल दिए जाते हैं उसी भाजपा में राजकुमार सैनी की इस हरकत को बरदाश्त किया जा रहा है। भाजपा का सारा गणित यह है कि अगर हरियाणा में पिछड़ा वर्ग सैनी के साथ जुड़ता है तो यह उसको फायदा पहुंचाएगा क्योंकि पिछड़े वोटों के ट्रांसफर होने का नुकसान कांग्रेस को तो होता दिखाई दे रहा है लेकिन भाजपा को जरा भी इसका नुकसान नहीं होने वाला। यानी कुल मिलाकर राजकुमार भाजपा आलाकमान के इशारे पर उनकी रणनीति के तहत ही अलग पार्टी का राग अलाप रहा है।

यूपी से आया इंपोर्टेड जाट नेता

यूपी से इंपोर्ट जाट नेता यशपाल मलिक ने जाट आरक्षण के नाम पर हरियाणा के युवकों को बहकाकर पूरे राज्य को हिंसा में झोंक दिया और खुद यूपी भाग गया। उस हिंसा के शिकार जाट युवक अभी भी या तो जेलों में हैं या मुकदमे भुगत रहे हैं।

कांग्रेस के असंतुष्ट और कुर्सी परस्त चौधरी बीरेंद्र सिंह के भाजपा में आने के बाद भाजपा का इरादा उन्हें जाट नेता के रूप में उभारने का था लेकिन बाद में उसने हाथ खींच लिया, क्योंकि चौधरी बीरेंद्र सिंह के पास सर छोटू राम का नाम भुनाने के अलावा कोई जनाधार नहीं था। जनाधार होता तो कांग्रेस उन्हें कब का हरियाणा के मुख्यमंत्री की कमान सौंप चुकी होती। हरियाणा में जाटों को बांटने के लिए भाजपा ने नई व्यूह रचना की और यशपाल मलिक को यूपी से ले आए। अभी तक यशपाल मलिक की कुल कारस्तानी यह है कि जमकर जाटों के जज्बात को भुनाकर उनसे चंदा वसूला जाता है। उन्हें सर छोटूराम के सपनों का हरियाणा बनाने के सब्जबाग दिखाए जाते हैं और अगली ट्रेन या बस पकड़कर यह स्वयंभू जाट नेता यूपी चला जाता है। फिर कुछ दिन बाद लौटता है और फिर से पुरानी कहानी को एक और कदम बढ़ाया जाता है। हरियाणा के जाट इस इंपोर्टेड नेता से यह पूछने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं कि अभी तक राज्य सरकार से इतनी दौर की बातचीत के बाद तुम्हारी उपलब्धि क्या है। न ही शख्स से पिछले चंदों का हिसाब मांगा जा रहा है।

यशपाल मलिक अब हरियाणा के जाटों से कह रहा है कि चुनाव में हम अपने जाट प्रत्याशी खड़े करेंगे और कुछ सीटें लेकर दिखाएंगे, तभी सारी पार्टियां हमारी बात सुनेंगी।

फिर गणित क्या है भाजपा का

बहुत सीधा सा गणित है। जाट या तो कांग्रेस के साथ है या फिर चौटाला खानदान की इनैलो के साथ है। जाट अगर यशपाल मलिक के बहकावे में आकर सिर्फ उसी उन्हीं प्रत्याशियों को जिता देता है या वोट दे देता है तो इसका सीधा फायदा भाजपा को होगा। क्योंकि वह दो मजबूत दिखने वाली विपक्षी पार्टियों के वोटबैंक को तोड़ने में कामयाब हो जाएगी। यशपाल मलिक अपने भाषणों में तमाम जाट महापंचायतों में बस यही राग अलापता है कि हमें एकजुट होना है और अगले चुनाव में इसका जवाब देना है।...बेचारे भोले जाट इसकी आवाज पर उठा देते हैं और भाजपा आलाकमान का खून एक चम्मच बढ़ जाता है।

कांग्रेस-इनैलो के पास कोई काट नहीं

बहुत हैरानी की बात है कि कांग्रेस और इनैलो ने अभी तक भाजपा की इस व्यूह रचना की काट तैयार नहीं की। कांग्रेस में जाट नेता भरे हुए हैं। लेकिन उनमें आपस में इतना मनमुटाव है कि वो सारे के सारे यूपी से इंपोर्टेड यशपाल मलिक के सामने बौने दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस ने अभी तक जिम्मेदार पार्टी होने का संकेत नहीं दिया। हरियाणा में इतने मुद्दे उठे और बने लेकिन कांग्रेस एक भी मुद्दे पर राज्यव्यापी आंदोलन नहीं छेड़ पाए। पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष तंवर की आपसी लड़ाई किसी से छिपी नहीं है। तंवर की महत्वाकांक्षाओं ने हरियाणा कांग्रेस को गर्त में पहुंचाने का काम कर दिया है। हुड्डा को यह लगता है कि उन्होंने लगातार दस साल तक हरियाणा पर राज किया तो वोटर उनकी जेब में है। हुड्डा एक भी सार्थक मुद्दे पर राज्य में कोई बड़ा आंदोलन नहीं छेड़ पाए। अब जब कम दिन बचे हैं तो उन्होंने थोड़ा बहुत निकलना शुरू किया है।

चौटाला का करिश्मा और नई चुनौतियां

इनैलो तो कांग्रेस से भी पतली हालत में है। ओमप्रकाश चौटाला के जेल जाने के बाद पार्टी की बेबसी साफ नजर आती है। बेटों में वो हुनर नहीं है जो तमाम नकारात्मक छवि के बावजूद ओमप्रकाश चौटाला कर दिखाते थे। देवीलाल की विरासत आज चौराहे पर खड़ी है। अफसोस होता है कि जिस देवीलाल ने किसानों को इंसाफ दिलाने के लिए पूरे हरियाणा को एकजुट कर दिया था और हर वर्ग के लोग उनकी पार्टी से जुड़ गए थे, उसे पहले ओमप्रकाश चौटाला ने और फिर उनके बेटों ने छिन्नभिन्न कर दिया। इसके बावजूद भी इनैलो में इतना दमखम बचा रहा कि वह मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में भाजपा या कांग्रेस को चुनौती दे सकती थी। लेकिन ओमप्रकाश के बूढ़े होने के बाद बेटे कुछ करिश्मा नहीं कर पाए हैं। मेरा मानना है कि इनैलो में अभी भी देवीलाल की विरासत के कुछ अंश बचे हैं जो इसकी वापसी करा सकते हैं लेकिन इसके लिए उसे एक बड़े सार्थक आंदोलन की दरकार है।

रणनीति है एक चुनौती

कांग्रेस और इनैलो के लिए भाजपा की रणनीति एक चुनौती है। अगर इस गेम में भाजपा की रणनीति कारगर रहती है तो ये दोनों पार्टियां कम से कम हरियाणा में धूल में मिल जाएंगी। लेकिन अगर दोनों पार्टियां सिर्फ अपनी विरासत बचा सकीं तो भाजपा हरियाणा में जड़ से साफ हो जाएगी।

सोशल मीडिया पर हम मुसलमानों की प्राथमिकताएं !

फेसबुक पर आठ साल से ज़्यादा हो गए, इस मंच पर मुसलमानों की बड़ी तादाद की प्राथमिकताएं देखता आया हूँ, उन प्राथमिकताओं या पसंद को यहाँ क्रमवार दे रहा हूँ!

पहली पसंद : 'फ़रिक़ापरस्ती' है, पसंद बोले तो इस विषय पर पोस्ट करना, या ऐसी पोस्ट को देखते ही टूट पड़ना, और इस मुद्दे को रबड़ की तरह खींच कर एक सप्ताह तक फिरक़ापरस्ती की जुगाली करना !

दूसरी पसंद : 'ओवैसी और इमरान' मामला, इस मामले के भी कई स्पेशलिस्ट हैं, मुसलमान इन दोनों में से किसी एक की प्रशंसा या बुराई या सवाल उठाने वाली पोस्ट पर भी फिरक़ापरस्ती वाली पोस्ट की तरह टूट पड़ते हैं, और दो खेमे बनाकर लफ़्ज़ों की बम, तोपें और गोलियों के साथ साथ गालियों की बौछार करते नज़र आते हैं !

ये विवाद मुझे ठीक ऐसे लगता है जैसे कोई हैदराबाद में अपने घर के बाहर खड़ा होकर दिल्ली की ओर मुंह करके पत्थर फेंक रहा हो, और दिल्ली वाला हैदराबाद की ओर मुंह करके पत्थर फेंक रहा हो, और दोनों के पडोसी उनकी ये हरकतें देखकर हंसकर बावले हुए जा रहे हों !

उपरोक्त टॉप दो विषयों की एक खास बात ये भी है कि जिस भी बन्दे के यहाँ लाइक और कमेंट का सूखा पड़ा होता है वो इन दोनों में से किसी एक पर पोस्ट करके लोगों के झुण्ड को इन्वाइट करता है और उसकी मनोकामना तीन चार सो कमैंट्स और पांच साथ सो लाइक के साथ पूरी भी होती है !

इसके बाद तीसरे नंबर पर आता है 'मोदी विरोध' : ये विषय ऐसा है जिसपर अधिकांश मुसलमानों की रोज़ हज़ारों पोस्ट्स होना लाज़मी है, भले ही देश में कोई भी मुद्दा चल रहा हो !

इसके बाद चौथे नंबर पर आती है 'मज़हबी' पोस्ट्स, जिसमें मुसलमान बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं, और जमकर अपनी टैग मनोवृत्ति की पुर्ती भी करते हैं, टैग मंज़ूर न करने या टैग न करने के निवेदन पर वो सामने वाले मुसलमान को इस्लाम से ख़ारिज भी करते नज़र आते हैं !

इन टॉप चार के बाद बाक़ी 'चिल्लर विषयों' पर तवज्जो रहती है, जिसमें एजुकेशनल, सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक, मोटिवेशनल और मनोरंजन आता है !

इसमें सियासी पसंद छूट इसलिए गयी है कि ओवैसी - इमरान विषय और मोदी विरोध विषय में ही सियासी बहसबाज़ी वैचारिक आदान प्रदान भी हो जाता है, या कभी अलग से भी किया जाए तो ये तीनों इसमें ज़रूर शामिल रहते हैं !

कुल मिलाकर इस मंच का उपयोग, सदुपयोग या जो भी करते रहे हैं मेरी नज़र में इसी क्रमांक में बैठता है, ये मेरा आंकलन है हो सकता है आपका आंकलन मुझसे अलग है, जो देखा, महसूस किया लिख दिया, किसी को ठेस पहुंचाना मेरा मक़सद नहीं है, हमें 'हम लोगों' के अलावा भी बहुत से लोग पढ़ते हैं, और सब देख पढ़कर अपनी राय क़ायम करते हैं, इस मंच का सकारात्मक और सार्थक उपयोग कीजिये, ताकि सोशल मीडिया पर से क़ौम का 'सामूहिक इंटरेस्ट' निकल कर सामने आये तो हमें हैरानी और अफ़सोस नहीं हो !

- सैयद आसिफ़ अली

खट्टर सरकार का संदेश : पढ़ाई की मांग करोगे तो लाठी खाओगे

नेहरू कॉलेज के धरने पर बैठे छात्रों को पुलिस ने पीटा व गिरफ्तार किया

फरीदाबाद (म.मो.) सैक्टर 16ए स्थित राजकीय नेहरू कॉलेज के गेट पर महीनों से प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर कल यानी 31 अगस्त को पुलिस ने बर्बर लाठीचार्ज करके खट्टर सरकार के असली दांत दिखा दिये। ये छात्र सरकार से न तो नौकरी मांग रहे थे न कोई भत्ता, ये तो केवल वही कुछ मांग रहे थे जो सरकार को बिना मांगे दे देना चाहिये, बल्कि दिये जाने का ढोल पीट रही है।

छात्रों की मांगे :

- सभी सरकारी कॉलेजों में यूजी-पीजी कक्षाओं में बीस प्रतिशत सीट बढ़ाई जायें।
- छात्र संघ चुनाव बहाल कर प्रत्यक्ष रूप से चुनाव कराए जाएं।
- फरीदाबाद में एमडीयू का रीजनल सेंटर बनाया जाए।
- नेहरू कॉलेज की जर्जर इमारत का निर्माण कराया जाए।
- सभी सरकारी कॉलेजों में मूलभूत सुविधाएं एवं स्टाफ पूरा किया जाये।
- मैगपाई चौक पर छात्रों को रोड पार करने के लिए फुट ओवरब्रिज का निर्माण किया जाये।
- सेमेस्टर प्रणाली बंद हो।
- प्रत्येक कॉलेज में छात्रों के लिए वूमेन सेल का गठन किया जाये।

छात्रों की ये मांगे कोई नई नहीं है। गत कई वर्षों से छात्र इन मांगों के लिए धरना प्रदर्शन करते आ रहे हैं। जो भी स्थानीय विधायक, सांसद एवं मंत्री होता है उसके चक्कर काटते रहे हैं। लेकिन छात्रों को पढ़ाई से वंचित रखने की ठान चुकी सरकार ने कभी भी झूठे आश्वासनों के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया और न ही देने का कोई इरादा है।

धरने, प्रदर्शनों के शुरूआती दौर में तो भाजपा का अपना छात्र संघ -एबीवीपी भी संघर्ष की बात करता रहा। परन्तु एन मौके पर दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। सुधी छात्रों को राजनीतिक दलों के पिछलग्गू नेताओं से सावधान रहते हुए अपने संघर्ष को आगे बढ़ाना चाहिए।